Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
The UGC-Approved Journal S.No. 2750
ISSN: 2456-0146
Vol. 2, Issue-I
Mav 2017
e-ISJN: A4372-3068
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)

डॉ0 अम्बेडकर जी का अब भी सही मूल्यांकन नहीं हो पाया है?

डॉ0 शरद कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, जक्खिनी, वाराणसी

वर्षों से भारतीय कला, साहित्य, चिंतन, फैशन आदि पश्चिमी साहित्य कला तथा चिन्तन का अनुकरण करने को अभिशप्त रहा है। भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग की एक करूण त्रासदी यह भी रही कि वह भारत से लेकर विशिष्ट महामानवों के मूल्यांकन करने तक में पश्चिम के मापदण्डों को ही आधार बनाता रहा है। इस क्रम में वह बराबर से यह तथ्य विस्मृत करता रहा है कि कायिक वैशिष्टय में मनुष्य जैसा होने के बावजूद भारत में मनुष्य नहीं मनुष्यों की दस हजार प्रजातियाँ वास करती हैं। विशुद्ध मनुष्य तो श्रेणी समाजों में वास करते हैं। ऐसे जातिवादी मानव प्रजातियों को जब हम श्रेणी समाजों में वास करने वाले मनुष्यों की भाँति समझकर उसके क्रियाकलापों का वृहत्तर समाज के हित में मूल्यांकन करते हैं, तब निराशा होती है। क्योंकि भारत के जाति समाज में निर्मित सोच के बड़े से बड़े लोग भी सर्व वर्ग के हित की कसौटी पर खरा नहीं उतर पाते। ऐसे में हम उसकी सीमाओं के प्रति कुछ सहानुभूतिशील होने के बजाय, उसके आलोचक बन जाते हैं। जातिवादी भारतीय सीमाओं को समाजशास्त्रीय डॉ0 अम्बेडकर जी के निष्कर्षों को आधार बनाकर किसी महामानव के कार्यकलापों का अध्ययन करें तो निश्चय ही उसकी सोच की सीमाबद्धता का मजाक नहीं उड़ायेंगे।

अधिकांशः गैर दलित यह सोचते हैं कि उन्होंने अछूतों के लिए मूल रूप से संघर्ष किया है। जबकि ऐसा नहीं है। 1951 में कानून मंत्री के पद से डॉ0 अम्बेडकर जी ने त्यागपत्र दलितों के सवाल पर नहीं दिया था, बल्कि महिलाओं को सम्पत्ति में बराबर का अधिकार के मुद्दे पर दिया था। हुआ यह था कि नेहरू से मशविरा करके हिन्दू बिल को पेश किया गया। जिससे सम्पत्ति में महिला और पुरूष दोनों के बराबर अधिकार का प्रावधान था। तमाम सांसदों ने जब उसका विरोध किया तो नेहरू जी ने अपने हाथ खीच लिये और ऐसी स्थिति में बिल पास होने का कोई मतलब ही नहीं होता। जब बिल पास नहीं हो सका तब डॉ0 अम्बेडकर जी बहुत ही आहत हुए और उन्होंने कानून मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया। क्या स्त्रीवाद की वकालत करने वाली महिलाओं ने डॉ0 अम्बेडकर के साथ न्याय किया? जो लोग लिंग समानता की बात करते नहीं थकते, क्या वे कभी इसकी चर्चा करते हैं? दलित महिलाओं को तो कुछ पता भी है, सवर्ण महिलाओं को तो इस योगदान का पता नहीं। तमाम गैर दलित शिक्षित महिलाओं से जब मैंने इस बारे में चर्चा की, तो वे बिल्कुल अनभिज्ञ निकली। यहाँ पर अम्बेडकर के साथ न्याय होता नहीं दिखता, लेकिन सच बहुत दिनों तक छुपने वाला नहीं है।

Research Ambition ISSN: 2456-0146
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Vol. 2, Issue-I
Mav 2017
Impact Factor: 3.071 (IIJIF) The UGC-Approved Journal S.No. 2750 e-ISJN: A4372-3068

2012 में सर्वेक्षण कराया गया कि गांधी के बाद कौन सबसे महानतम् भारतीय है। चयन की प्रक्रिया तीन चरणों में थी। पहला मतदान, दूसरा सर्वे एवं तीसरा बुद्धिजीवी समूह की राय। इन तीन चरणों में जूरी, जिसमें 28 प्रबुद्ध भारतीय थे, आदि के सर्वेक्षण ने महानतम भारतीय की फाइनल रैकिंग में डॉ0 अम्बेडकर जी प्रथम स्थान पर रहे। जबकि दावेदारों की सूची में जवाहरलाल नेहरू, लता मंगेशकर, बल्लभ भाई पटेल, डॉ0 अब्दुल कलाम, मदर टेरेसा, जेआरडी टाटा, सचिन तेंदुलकर, इन्दिरा गांधी आदि के नाम भी शामिल थे। पर ये सभी डॉ0 अम्बेडकर जी से पीछे थे। जिस दिन चैनल ने परिणाम घोषित किया, अतिथि के रूप में अमिताभ बच्चन जी को बुलाया गया, जो डॉ0 अम्बेडकर जी का सही मूल्यांकन नहीं कर सके, पूर्वाग्रह इस हद तक कि इस अवसर पर डॉ0 अम्बेडकर जी के किसी अनुयायी को बुलाने में भी परहेज किया गया। बहर हाल उक्त मौके पर सभी ने कहा कि डॉ0 अम्बेडकर जी ने भारतीय संविधान लिखा और वह सबसे बड़ा योगदान है, जबकि मेरे विचार से यह सच नहीं है। उनका सबसे बड़ा योगदान दलितों को गुलामी से आजाद कराना एवं समता मूलक समाज के लिए उनका संदेश रहा है कि – *''समस्त भारत भूमि तुम्हारे पूर्वजों की धरोहर है, तुम्हीं इसके सच्चे उत्तराधिकारी हो, हिन्दू धर्म वर्णों का धर्म है, हिन्दू सवर्ण हैं तुम अवर्ण हो। कुत्ते–बिल्ली के पेशाब से उन्हें कोई परहेज नहीं, परन्तु तुम्हारे द्वारा दिये गये गंगाजल से वे अपवित्र हो जाते हैं। तुम्हारी गरीबी का मुख्य कारण हिन्दू धर्म के आडंबर और तुम्हारी अज्ञानता है, तुम्हें जो आरक्षण मिला है वह किसी की दया की भीख नहीं बल्कि तुम्हारा अधिकार है। अधिकार माँगने से नहीं छीनने से मिलता है, इसे छीन लो, अधिकार पाने के लिए बलिदान देना होता है और जिसमें बलिदान का साहस न हो वह आगे नहीं बढ़ सकता फिर वह समाज हो या व्यक्ति, अन्याय का विरोध और अधिकार की प्राप्ति ही जीवन है। 15 अगस्त 1947 को तुम्हें गुलाम बनाने वाले तो आजाद हो गये पर तुम्हें गुलाम बनाने वालों ने तुम्हें आजाद नहीं किया। शिक्षित करो, आन्दोलित करो, संगठित करो विजय तुम्हारी ही होगी। लेकिन मुझे शर्म के साथ कहना पड़ रहा है कि पढ़े–लिखे दलितों ने धोखा दिया है मुझे आशा थी कि वे समाज की सेवा करेंगे किन्तु मैं देखता हूँ गुलामों की एक भीड़ इकट्ठी हो गयी है। जो अपने स्वार्थ में लिप्त है''*, ऐसे में डॉ0 अम्बेडकर जी का अब भी सही मूल्यांकन नहीं हो पाया है। अब डॉ0 अम्बेडकर जी के अनुयायी अपेक्षा भी करने लगे हैं कि दूसरे समाज के लोगों द्वारा भी उन्हें सम्मान दिया जाना चाहिए। ऐसा करना जरूरी भी है अन्यथा ऐसी स्थिति पैदा हो जाएगी कि जिन जाति में महापुरूष ने जन्म लिया है, उसी से जुड़े लोग उसकी स्मृति में कार्यक्रम किया करेंगे।

दलित जय भीम, जय भारत का नारा तो लगाते हैं लेकिन जयभारत हो या भारत माता की जय, दोनों के भावार्थ एक ही है। सामाजिक न्याय की ताकते अपने अधिकार की बात करती हैं तो वह शुद्ध राष्ट्रवाद है। इससे देश की एकता और अखंडता कहीं ज्यादा सुदृढ़ होती थी। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि भारत

Research Ambition ISSN: 2456-0146
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Vol. 2, Issue-I
Mav 2017
Impact Factor: 3.071 (IIJIF) The UGC-Approved Journal S.No. 2750 e-ISJN: A4372-3068

लगभग 7000 हजार जातियों में बंटा हुआ है, और प्रत्येक जाति की सोच यहीं थी कि वह अपने पेशे तक सीमित रहे। चमार है तो चमड़े का काम करे, नाई बाल काटे, धोबी कपड़ा धोए। खटिक सब्जी और सुअर पालन करे। देश में कोई आए या जाए उससे क्या मतलब? एक ही जाति की जिम्मेदारी थी, शासन–प्रशासन और देश की रक्षा करना। उस जाति की संख्या कम होना तो हार का कारण हुआ ही करता था, हमलावरों रणनीति के तहत और जातियों को मिला लेते थे। दूसरी जातियों के लोग या तो उदासीन हो जाते थे या हमलावरों के साथ। अतः जातिवाद ने देश को गुलाम बनाया। जनतन्त्र और आरक्षण की वजह से महिला पुरूष और लगभग सभी जातियों की जिम्मेदारियाँ शासन प्रशासन में सुनिश्चित हुई। जिसकी वजह से अब देश में कोई आए या जाए यह सबका सरोकार बन गया है और कोई हमें गुलाम बनाने की सोच भी नहीं सकता इसलिए अम्बेडकर जी का सही मूल्यांकन नहीं हो पा रहा है। जबकि अम्बेडकर का मतलब सामाजिक न्याय, सामाजिक सम्मान, सामाजिक क्रान्ति बिना राजनैतिक क्रान्ति हो ही नहीं सकती। अतः पहले सामाजिक न्याय से संगठित हो जाओ और वह राष्ट्रीय एकता और अखंडता का ही पर्याय है। इससे जाति विहीन समाज की स्थापना सम्भंव है, और समाधान भी है।

भारत में राष्ट्रीय या राष्ट्रवादी साहित्य का जन्म यहाँ ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध हुए राष्ट्रीय आन्दोलनों से हुआ था, ताकि यूरोप–अमेरिकी साहित्य की नकल से जैसा कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी कहा करते थे उसी तरह भारत में प्रगतिशील एवं जनवादी साहित्य का जन्म, भारत में मजदूर आन्दोलनों से हुआ है, ताकि रूसी और चीनी साहित्य की नकल और कलम से जैसा कि पहली परम्परा के साहित्यकारों का कहना है ....और ठीक उसी तरह दलित साहित्य का जन्म, भारत में दलित मुक्ति के आन्दोलनों से ही हुआ वहीं दलित साहित्य का जन्म भी, हिन्दी क्षेत्र में हुए दलित आन्दोलन से हुआ, न कि मराठी दलित साहित्य की कलम से, जैसा कि दूसरी परम्परा के साहित्यकारों अर्थात् प्रगतिशील–जनवादी साहित्यकारों का मानना है। यदि इसे राजनीति न समझा जाय तो मैं यह भी बात बता देना चाहता हूँ जन साहित्य की तरह, राजनैतिक पार्टियों का जन्म भी आन्दोलन से ही होता रहा है। डॉ अम्बेडकर जी के प्रत्यक्ष योगदान के कारण महाराष्ट्र में दलित आन्दोलन पहले हुआ। इसलिए वहाँ साहित्य का जन्म पहले हुआ।

शूद्र–अतिशुद्र शिक्षा से वंचित है, और अछूत होने के कारण अति शूद्र सभी वर्णों के मुख्य और स्थायी गुलाम हैं। इन सारी चीजों के मद्देनजर जब बाबा साहेब ने ग्रास रूट स्तर से वर्ण व्यवस्था को देखा, तो अपनी पहली परिभाषा के मूल तत्व, श्रम और श्रमिक को छोड़कर वे जन्मना की अवधारणा पर आ गये। इसलिये बाबा साहब ने जिन भी सुविधाओं आदि की विशेष व्यवस्था की, वे सभी जन्मना अर्थ जन्म पर आधारित है न कि श्रम पर। बाबा साहब की इस दृष्टि को लोग समझ नहीं पा रहे हैं। आज भी उपेक्षित है, दलित ही उपेक्षित कर रहा

Research Ambition ISSN: 2456-0146
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Vol. 2, Issue-I
Mav 2017
Impact Factor: 3.071 (IIJIF) The UGC-Approved Journal S.No. 2750 e-ISJN: A4372-3068

है, दलित अगर समझता तो आरक्षण द्वारा प्रथम श्रेणी की सेवा में लग जाने के बावजूद उन्हें अपने अधिनस्थ कर्मचारियों एवं शेष समाज द्वारा उसी शूद्र–अछूत वर्ग का समझा जाता है। जिसमें वह पैदा हुआ है। अर्थात् वह चाहे जो भी श्रम करे, श्रम करे या न करे वह माना गया उसी वर्ग का, जिसमें पैदा हो गया। वही नहीं, शेष वर्णों के लोगों–मरातन, ब्राह्मणों–क्षत्रियों, वैश्यों द्वारा उसे अपने से नीचे ही समझा जाता रहा। चाहे वे उसके अधिनस्थ कर्मचारी या सहयोगी ही क्यों न हो। दलितों ने यह भी देखा कि योग्यता की डींग हांकने वालों को जैसे ही वर्ण या जाति का पता चलता है। उनकी सारी योग्यता एकक्षण में समाप्त हो जाती है। योग्यता के निर्धारण में भी वर्ण निर्णायक बन जाता है।

आर्थिक दरिद्रता व्यक्ति को बार–बार लज्जित करती है। मगर वह इसे सहने को मजबूर होता है। क्योंकि इससे बाहर निकलने के लिए विशेष प्रयास करने होते हैं। दलित समाज लम्बे समय से गरीबी और अन्याय को झेलता आ रहा है। लगता है बच्चा–बच्चा, गली–गली, बस्ती–बस्ती, सभी साहूकारों के कर्जदार हैं। जमींदारों, काश्तकारों, नबाबों के आतंक से पीड़ित है। महिलाएँ अलग से काम के स्थानोंपर शोषित हैं। सारा समाज ही उगाही का शिकार है। और खुरचन, खिचड़ी खाकर पेट भर रहा है। मगर इनके बीच एक पीढ़ी उभर रही है जो पढ़ना चाहती है। आगे बढ़ना चाहती है। अपने अतीत से सीखकर अपने हाथों सुखद भविष्य बनाना चाहती है। इसे सहारा चाहिए। यह सहारा उन प्रावधनों का बन सकता है जो भूतकाल के दुर्व्यवहारों से माफी माँगते हुए उन्हें सद्व्यवहार और सहयोग देना चाह रहे हैं। लेकिन दलित समाज के जागरूक और चेतनाशील व्यक्तियों को परम्परागत गुलामी की उस चादर को उतार फेंकने के लिए, बिना यह सोचे–समझे कि कौन हमें, क्या कह रहा है। अपने भाइयों के दुखों का अन्त करने और समाज में समता की धारा प्रवाहित करने के लिए आगे तो आना ही होगा। जिसका प्रारम्भ हो चुका है। सहयोग आवश्यक है।[1] उन्नीसवीं सदी में सोचने के लिए मजबूर कर दिया है कि इसके बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता है। क्योंकि दलित जाति भारतीय समाज का दर्पण है। जहाँ जातिवादी–पुरूषवादी–'सामंती विसंगतियाँ है। तो वहीं उत्तर आधुनिक युग का भूमण्डलीकरण और बजारवाद भी है। जाति का अजगर गाँव–मुहल्ले में रहने वालों की ही नहीं अतिपु महानगरों की मल्टीस्टोरी विल्डिग के निवासियों को भी डस रहा है।[2] डॉ अम्बेडकर जी के अनुसार गाँव वर्ण व्यवस्था की कार्यशाला है, तो गाँव में स्थित विद्यालय कैसे मुक्त हो सकता है। यहीं कारण है कि दलित शिक्षा के महत्व और पद के प्रभाव को समझने लगे है। बाबा का सही मूल्यांकन करने लगे हैं। जाति के प्रकोप से मुक्ति पाना आसान नहीं है। देर से मिला न्याय अन्याय के बराबर है। इसके बाद भी दलितों को न्याय न मिले तो? न्याय व्यवस्था में आरक्षण की बात अकारण नहीं उठाई जा रही है। शासन का रवैया भी कम सवर्णवादी नहीं है।

Research Ambition ISSN: 2456-0146
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Vol. 2, Issue-I
Mav 2017
Impact Factor: 3.071 (IIJIF) The UGC-Approved Journal S.No. 2750 e-ISJN: A4372-3068

साफ जाहिर है कि बाबा साहब का मुख्य उद्देश्य मानवतावाद की स्थापना करना है। जिसमे जाति, लिंग, धर्म, वर्ण और समुदाय के आधार पर भेदभाव के लिए कोई जगह नही है। उनका मानवतावाद आजादी, बराबरी और भाईचारे जैसे जनवादी और लोकतांत्रिक मूल्यों व अधिकारों पर आधारित है। वह जातिविहीन और वर्णविहीन समाज व्यवस्था के लिए कटिबंध है।[3] अम्बेडकरवादी विचार धारा में भारतीय और यूरोपीय मानवीय भी वैज्ञानिक परम्पराओं का जो कुछ भी मूल्यवान है, उस सब को समेट लेते हैं। भारत में बुद्ध, कबीर, फुले और अम्बेडकर तो यूरोप में, फ्रांस की क्रान्ति के आदर्श–स्वतंत्रा समानता और भाई चारा तथा मार्क्स एंगेल्स लेलिन का योगदान को देखने की आवश्यकता है। इस तरह उनका अम्बेडकरवाद एक अन्तर्राष्ट्रीय विचार धारा बनकर सामने आता है। अम्बेडकर जी सामाजिक बदलाव को अपना लक्ष्य मानकर चलते हैं। श्रमिक वर्ग के नेतृत्व में सामाजिक क्रान्ति की संकल्पना प्रस्तुत करता है। वह समान रूप से ब्राह्मणवाद, सामान्तवाद, पूंजीवाद और साम्राज्यवाद को मजदूर वर्ग का सबसे बड़ा दुश्मन मानकर उसके खिलाफ संधर्ष चलाता है। इस तरह एक अन्तराष्ट्रीय विचार धारा बन जाती है।[4]

जातिप्रथा का विनाश अम्बेडरकरवादी चिंतन की धुरी है। जातिप्रथा भारतीय समाज की ऐसी सच्चाई है, जिससे मुँह मोड़ पाना सम्भव नहीं है। जातिवादी शोषण के वैचारिक अस्त्रागार में कई अस्त्र रहे हैं। जिसके जरिये उन्होंने निम्न जातियें का निर्मम शोंषण किया है। यह केवल सामाजिक परिघटना नही है, बल्कि आर्थिक परिघटना भी है। यह शूद्र और अतिशूद्र कही जाने वाली जातियों के श्रम की लूट है। इस क्रम में अभी तक बाबा साहेब का सही मूल्यांकन न होने का परिणाम है। जरूरत है ठहरे हुए समाज को बदलने की। इसका प्रभाव अब साफ दिखाई देने लगा है, इस देश के शूद्रों–अतिशुद्रों ने जाति व्यवस्था को कभी स्वीकार नहीं किया। उसका हमेशा विरोध किया। इसके बरक्स वर्चस्व शाली वर्गो ने इस परम्परा का दमन किया है। आज भी कोशिश जारी है कभी इसकी उपेक्षा करके, कभी निंदा करके, कभी हमला करके, कभी आत्मसात करके,। संधपरिवार हिन्दुत्व के जरिये ब्राह्मणवादी संस्कृति का पुनः वर्चस्व स्थापित करके जातिवादी समाज व्यवस्था को ही लागू करना चाहता है।[5]

जाहिर है यह हिन्दु धर्म लोकतंत्र, समानता और स्वतंत्रा का विरोधी है। वह सभी मानव मूल्यों का भी विरोधी है। इन्हीं सब सवालों का हल ढूँढना है। मार्क्सवाद ने पड़ताल की, इस खोज के फलस्वरूप वे बौध धर्म तक पहुँचे। इस देश की पूरी श्रमण परम्परा वह भी जिसे ये तथा कथित आजीवक परम्परा कहते हैं। यह गलत है। यह तो वैज्ञानिक और भौतिकवादी सोचकर आधारित रही है, यह जानकर आश्चर्य होगा की स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में अछूत ही लड़े थे। प्लासी की लड़ाई मे दुसाध लड़े थे। कोरेगॉव की लड़ाई मे महार लड़े थे। इस आन्दोलन के विभिन्न मोर्चों पर झलकारीवाई, लोचन मल्लाह, पूरन कोरी ऊदादेवी, महावीरी देवी, चेतराम जादव,

Research Ambition ISSN: 2456-0146
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Vol. 2, Issue-I
Mav 2017
Impact Factor: 3.071 (IIJIF) The UGC-Approved Journal S.No. 2750 e-ISJN: A4372-3068

बल्लू मेंहतर, बॉके चमार, वीरापासी आदि के नेतृत्व मे दलित वर्गो ने पूरी शक्ति से इस गदर में भाग लिया। राजभक्ति के बीच में मुख्य अंतर्विरोध के रूप में ब्राह्मणवाद (जातिवाद) बैठा हुआ है जिसने 1857 के सम्पूर्ण विद्रोह को अपरिहार्य पराजय की ओर ढ़केल दिया था[6]। डॉ0 अम्बेडकर जी के जीवन में सक्रियता का पहला पड़ाव महाड़ आन्दोलन, दूसरा पड़ाव भारतीय मजदूर दल के निर्माण का, तीसरा पड़ाव शैडयूल कास्ट फडरेशन का है। उनका सपना था जातिविहीन समाज की स्थापना। स्वतंत्रता संमानता, और बन्धुतत्व। सच्चा सामाजिक लोकतंत्र स्थापित करना है तो समानता के मूल्य और अधिकार पर ज्यादा जोर देना होगा अम्बेडकरवाद का अर्थ है कि वर्ण या जाति, वर्ग और जेंडर तीनों पैरामीटर्स के प्रति सेंसिटिव जो समाज दृष्टि है। यही है अम्बेडकरवाद। यही जातिवाद। यही जाति विहीन समाज का समाधान है।

सार है कि डॉ अम्बेडकर जी का सही मूल्याकंन अभी तक नहीं हो सका है। सभी विचार प्रगतशील है, जो प्रासंगिक हैं। इन विचारों से नवभारत और नई पीढी का निर्माण किया जा सकता है इन सभी विचारों से भारत विश्व में एक महाशक्ति के रूप में उभर सकता है। विकल्प के रूप में जाति तथा धर्म विहीन व्यवस्था की नींव रखी जा सकती है। साथ में सतर्क भी कराती है कि अगर जाति चेतना पर ही बल देते रहेगे तो एनीहिलेशन आफ कास्ट सभव नही होगा। यह मनुष्य का श्रम है, जिसकी कोई जाति नहीं, मनुष्य के श्रम का कोई लिंग नहीं, मनुष्य के श्रम की कोई नस्ल नही है अम्बेडकर हमारे समय का विचार है। इससे मदद लेने की जरूरत है। अपने लेख के माध्यम से मैंने डॉ0 अम्बेडकर जी छूने का तुच्द प्रयास किया है जबकि इसके अतिरिक्त उनका शिक्षा, साहित्य, कानून, दर्शन, मानवशास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र समाजशास्त्र, भाषा तथा धर्म आदि ज्ञान के विविध क्षेत्रों में उनके योगदान एवं शोध का कोई सानी नहीं है। इसलिए उनहें 20वीं सदी का महानायक कहा जाता है। सही मायनों में डॉ0 अम्बेडकर प्रबुद्ध वर्ग के साथ–साथ विश्व की सम्पूर्ण मानवजाति के लिए आज पथ–प्रदर्शक बने हुए हैं। अम्बेडकर हमारे लिये सदैव आईकान रहेंगे।

संदर्भ :

1. अपेक्षा–जुलाई–सितम्बर 2010 पृ0 81।
2. डॉ0 जय प्रकाश कर्दम–दलित साहित्य (वार्षिकी) 2013 पृ0 193।
3. डॉ0 तेज सिंह–अम्बेडकरवादी साहित्य की अवधारणा, लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली 2010 पृ0 42।
4. वही पृ0 5।
5. तेज सिंह–अम्बेडकरवादी विचार धारा पृ0 68।
6. वही पृ0 136–137।